ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-6 अंक : 96

सहयोग शुल्क : रु. 1 / डिसेम्बर : 2024

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

विश्व विकलांग दिवस दिव्यांगों की गरिमा का प्रतीक है।
- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

विश्व विकलांग दिवस दिव्यांगों के समान अवसरों का महत्व दर्शाता है ।
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

३ दिसंबर विश्व विकलांग दिवस विश्व भर के दिव्यांगों के लिए दिपावली के पर्व की तरह सब से बड़े उत्सव का दिन है । संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव 47/3 द्वारा 1992 में 3 दिसंबर को विकलांग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के वार्षिक उत्सव की घोषणा की थी । यह दिन संसार भर के सभी दिव्यांगों के लिए सम्मान और गौरव के क्षणों से भरा है । किसी भी दिन को उत्सव की तरह मनाने का उद्देश्य होता है । विश्व विकलांग दिवस इसी प्रकार से दिव्यांगों को समान अवसर देना, उनका सम्मान और गौरव करना और उनके अधिकारों के बारे में अन्य सभी लोगों को जागृत और संवेदनशील बनाने का महत्वपूर्ण दिन है ।

वर्ष 1992 के बाद विश्व विकलांग दिवस को विभिन्न उद्देश्यों और थीम के साथ मनाया जा चूका है । किसी भी दिन को हम भले ही उत्साह और उमंग के साथ मनाते हों लेकिन उसका उद्देश्य तब तक सार्थक नहीं होता जब अन्य सामान्य दिनों में भी हम उन उद्देश्यों को सार्थकता से पाने का प्रयास करें । केवल विश्व विकलांग दिवस के दिन ही अगर अन्य लोगों की संवेदनाएं जागृत होती है, उनके अधिकारों का खयाल आता है और दिव्यांगों को समान अवसर देने की पेरवी करते हैं तो इसका कोई अर्थ नहीं है । दिव्यांगों के प्रति संवेदना, सम्मान, गौरव और उनके अधिकारों और समान अवसरों की चिंता हमें हमेशा रहनी चाहिए तभी विश्व विकलांग दिन सार्थक होगा । विश्व विकलांग दिन सही अर्थ में विकलांगों के उत्सव के साथ साथ अन्य लोगों को दिव्यांगों के प्रति संवेदनशील बनाने, उनके अधिकारों की पेरवी करने के लिए जागृक करने के लिए महत्वपूर्ण है ।

आनेवाले समय में देश, दुनिया और समाज का हर व्यक्ति दिव्यांगों को सम्मान दे, उन्हें समान अधिकार दे और उनके साथ दया या सहानुभूति के बदले उनकी क्षमताओं का स्वीकार कर उन्हें सम्मान देगा, समान अवसर देगा तब विश्व विकलांग दिन की सार्थकता सिद्ध होगी । विश्व विकलांग दिन की सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं ।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

डिसेम्बर : 2024, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष-6 अंक : 96

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्‌गुरु ॐऋषि स्वामी ।

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

३ दिसंबर अंतर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस का इतिहास और महत्व

संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव 47/3 द्वारा 1992 में 3 दिसंबर को विकलांग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के वार्षिक उत्सव की घोषणा की गई थी। इस दिवस के आयोजन का उद्देश्य विकलांगता के मुद्दों की समझ को बढ़ावा देना और विकलांग व्यक्तियों की गरिमा, अधिकारों और कल्याण के लिए समर्थन जुटाना है ।विश्व विकलांग दिवस का उद्देश्य विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों और उनके जीवन में समान अवसरों के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना है।

- संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 1981 को 'विकलांगजनों के लिये अंतर्राष्ट्रीय वर्ष' घोषित किया था।
- उसके बाद 1983-92 के दशक को को 'विकलांगजनों के लिये अंतर्राष्ट्रीय दशक' घोषित किया गया।
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 1992 से प्रतिवर्ष 3 दिसंबर को 'विश्व विकलांगता दिवस' के रूप में मनाने की शुरुआत की गई।

विश्व विकलांगता दिवस मनाने का उद्देश्य

- इस दिवस को मनाने का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य अशक्त जनों की अक्षमता के मुद्दों को लेकर समाज में लोगों की जागरूकता, समझ और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना है।
- विकलांग जनों के आत्म-सम्मान, कल्याण और आजीविका की सुरक्षा सुनिश्चित करने में उनकी सहायता करना।
- आधुनिक समाज में अशक्त जनों के साथ हो रहे हर प्रकार के भेद-भाव को समाप्त करना।

इस दिशा में किये गए प्रयास

- अशक्त जनों के अधिकारों के संवर्द्धन, संरक्षण एवं उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, रोज़गार, आवास एवं पुनर्वास, राजनीतिक जीवन में सहभागिता और समानता तथा भेदभाव रहित व्यवहार जैसे कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों को शामिल करते हुए 2006 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा 'अशक्तजनों के अधिकारों पर अभिसमय' (Convention on The Rights of Persons With Disabilities) स्वीकार किया गया।
- भारत ने इस अभिसमय पर 2007 में हस्ताक्षर किये तथा इसकी पुष्टि भी की।
- अशक्त जनों के प्रति प्रेम-भाव और आदर बढ़ाने के लिये भारत में इन्हें 'दिव्यांग' कहा जाने लगा है।
- यहाँ 40% या उससे अधिक अशक्तता वाले लोगों को दिव्यांग की श्रेणी में गिना जाता है।
- विकलांग व्यक्तियों के लिये सार्वभौमिक पहुँच प्रदान

करने के लिये सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के विकलांगजन सशक्तीकरण विभाग ने 'सुगम्य भारत' नामक एक देशव्यापी अभियान की शुरुआत की है।

- दिव्यांगजनों को विकास की मुख्यधारा में शामिल करने तथा उनके कौशल को पोषण देने एवं उनकी सुगमता और अधिकारों की सुरक्षा के लक्ष्य पर आधारित 'दिव्यांगजन अधिकार विधेयक -2016' पारित किया जा चुका है।
- इस विधेयक की मुख्य विशेषता विकलांगता की श्रेणियों को 7 से बढ़ाकर 21 किया जाना है। इसमें एसिड पीड़ितों को भी शामिल किया जाना उल्लेखनीय है।

विकलांग व्यक्तियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस (३ दिसंबर) १९९२ से संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रचारित एक अंतर्राष्ट्रीय पालन है। इसे दुनिया भर में अलग-अलग स्तर की सफलता के साथ मनाया गया है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य विकलांगता के मुद्दों की समझ को बढ़ावा देना और विकलांग व्यक्तियों की गरिमा , अधिकारों और कल्याण के लिए समर्थन जुटाना है । यह राजनीतिक , सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के हर पहलू में विकलांग व्यक्तियों के एकीकरण से प्राप्त होने वाले लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने का भी प्रयास करता है । इसे मूल रूप से २००७ तक " विकलांग व्यक्तियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस " कहा जाता था । प्रत्येक वर्ष यह दिन एक अलग मुद्दे पर केंद्रित होता है ।

अंतर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष १९८१

१९७६ में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने १९८१ को विकलांग व्यक्तियों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया । इसने राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्ययोजना बनाने का आह्वान किया, जिसमें अवसरों की समानता , पुनर्वास और विकलांगता की रोकथाम पर जोर दिया गया ।

अंतर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष का विषय "पूर्ण भागीदारी और समानता" था, जिसे विकलांग व्यक्तियों के अपने समाज के जीवन और विकास में पूर्ण रूप से भाग लेने, अन्य नागरिकों के समान जीवन स्थितियों का आनंद लेने तथा सामाजिक-आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप बेहतर स्थितियों में समान हिस्सेदारी के अधिकार के रूप में परिभाषित किया गया था ।

संयुक्त राष्ट्र विकलांग व्यक्ति दशक १९८३-१९९२

एक समय सीमा प्रदान करने के लिए जिसके

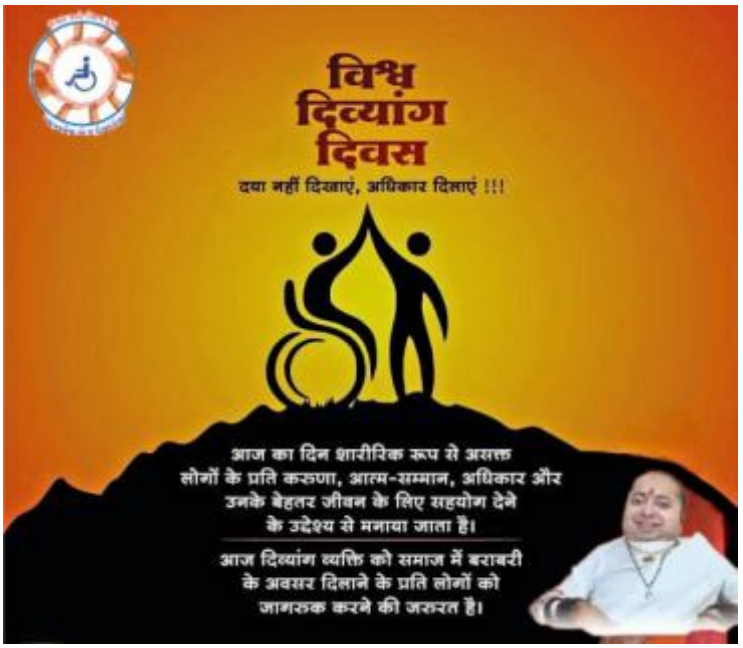

दौरान सरकारें और संगठन विश्व कार्य कार्यक्रम में अनुशंसित गतिविधियों को लागू कर सकें, महासभा ने १९८३-१९९२ को विकलांग व्यक्तियों का संयुक्त राष्ट्र दशक घोषित किया।

पिछले वर्षों के विषय

1998: "कला, संस्कृति और स्वतंत्र जीवन"

1999: "नई सहस्राब्दी के लिए सभी के लिए सुलभता"

2000: "सूचना प्रौद्योगिकी को सभी के लिए उपयोगी बनाना"

2001: "पूर्ण भागीदारी और समानता: प्रगति का आकलन करने और परिणाम का मूल्यांकन करने के लिए नए दृष्टिकोणों का आह्वान"

2002: "स्वतंत्र जीवन और सतत आजीविका"

2003: "हमारी अपनी आवाज़"

2004: " हमारे बिना हमारे बारे में कुछ भी नहीं "

2005: "विकलांग व्यक्तियों के अधिकार: विकास में कार्रवाई"

2006: " ई-एक्सेसिबिलिटी "

2007: " विकलांग व्यक्तियों के लिए सभ्य कार्य "

2008: "विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन: हम सभी के लिए सम्मान और न्याय"

2009: " एमडीजी को समावेशी बनाना : दुनिया भर में विकलांग व्यक्तियों और उनके समुदायों का सशक्तिकरण "

2010: "वादा निभाना: 2015 और उसके बाद सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों में विकलांगता को मुख्यधारा में लाना"

2011: "सभी के लिए एक बेहतर दुनिया के लिए एक साथ: विकास में विकलांग व्यक्तियों को शामिल करना"

2012: " सभी के लिए समावेशी और सुलभ समाज बनाने के लिए बाधाओं को दूर करना"

2013: "बाधाएं तोड़ो, दरवाजे खोलो: समावेशी समाज और सभी के विकास के लिए"

2014: " सतत विकास : प्रौद्योगिकी का वादा "

2015: " समावेश मायने रखता है: सभी क्षमताओं वाले लोगों के लिए पहुंच और सशक्तिकरण"

2016: " हमारे इच्छित भविष्य के लिए 17 लक्ष्य प्राप्त करना"

2017: "सभी के लिए टिकाऊ और लचीले समाज की ओर परिवर्तन"

2018: " विकलांग व्यक्तियों को सशक्त बनाना तथा समावेशिता और समानता सुनिश्चित करना"

2019: "विकलांग व्यक्तियों की भागीदारी और उनके नेतृत्व को बढ़ावा देना: 2030 विकास एजेंडा पर

कार्रवाई करना "

2020: "बेहतर पुनर्निर्माण: कोविड-19 के बाद विकलांगता-समावेशी, सुलभ और टिकाऊ दुनिया की ओर"

2021: " कोविड-19 के बाद समावेशी, सुलभ और टिकाऊ दुनिया की दिशा में विकलांग व्यक्तियों का नेतृत्व और भागीदारी"

2022: "समावेशी विकास के लिए परिवर्तनकारी समाधान: एक सुलभ और न्यायसंगत दुनिया को बढ़ावा देने में नवाचार की भूमिका "

2023: "विकलांग व्यक्तियों के लिए, उनके साथ और उनके द्वारा सतत विकास लक्ष्यों को बचाने और संग्रहित करने के लिए एकजुट कार्रवाई"

२०१२ के अंतरराष्ट्रीय विकलांग दिवस पर, यूनाइटेड किंगडम सरकार ने विकलांग लोगों के लिए अनिवार्य काम की शुरुआत की, जिन्होंने "अनिवार्य रोजगार द्वारा विकलांग लोगों के काम पाने की संभावनाओं को बेहतर बनाने" के लिए कल्याण लाभ प्राप्त किए । सुसान आर्चीबाल्ड सेंटर के संस्थापक ने कहा कि विकलांग लोगों का अनिवार्य रोजगार विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के अनुच्छेद २७/२ का उल्लंघन है । द गार्जियन ने उल्लेख किया कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा नियुक्त इस दिन से विकलांग लोगों और कैंसर से लेकर लकवा और मानसिक स्वास्थ्य जैसी बीमारियों से ग्रस्त लोगों को यूके सरकार द्वारा मुफ्त में काम करने के लिए मजबूर किया जा सकता है या फिर उन्हें अपने कल्याण लाभों का ७०% तक छीनने का जोखिम है । संयुक्त राष्ट्र विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों के सम्मेलन (यूएनसीआरपीडी) के अनुच्छेद ९ के तहत सुलभ भारत अभियान नामक पहल के रूप में देश के "भिन्न-सक्षम" समुदाय की सेवा के लिए ३ दिसंबर को भारत में भी एक कार्यक्रम शुरू किया गया था।

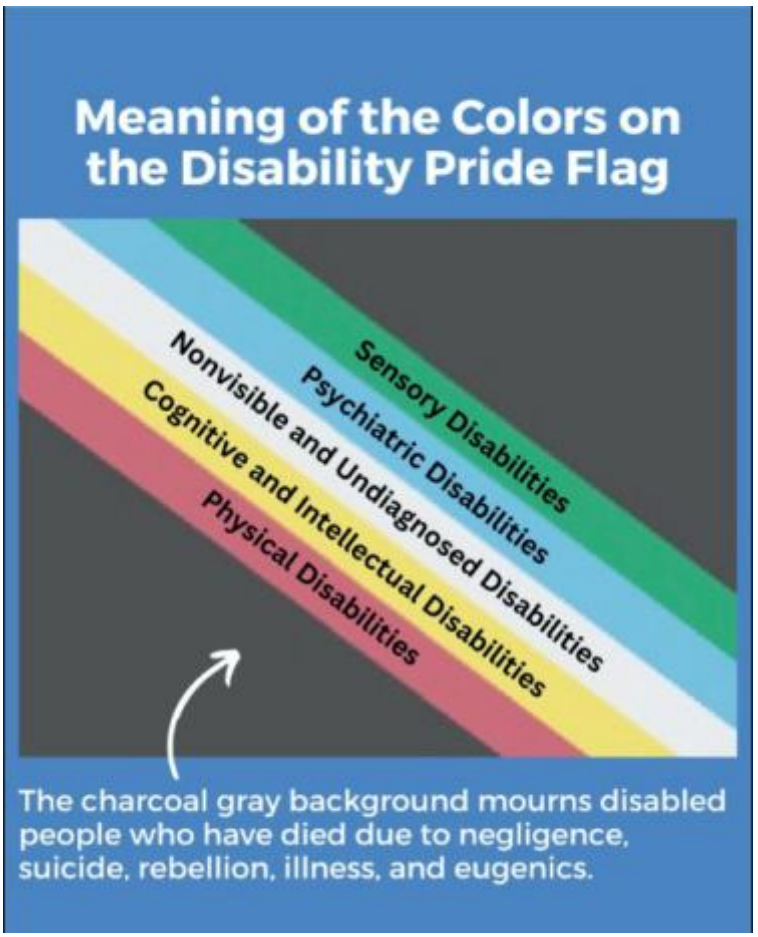

विकलांगता ध्वज

विकलांगता ध्वज , पराजय ध्वज या विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों का ध्वज एक ध्वज है जो विकलांग लोगों का प्रतिनिधित्व करता है । इसे वैलेंसियन डांसर इरोस रेसियो ने २०१७ में बनाया था और फिर संयुक्त राष्ट्र को प्रस्तुत किया । ध्वज सामान्य उपयोग के लिए है, विशेष रूप से विकलांगता-केंद्रित घटनाओं पर। इसका उपयोग विकलांग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर किया गया है।

डिजाइन और अर्थ

ध्वज का उद्देश्य विकलांग लोगों, अधिकारों के लिए उनके संघर्ष और विकलांगता गौरव आंदोलन और पैरालंपिक खेलों सहित संबंधित अवधारणाओं का प्रतिनिधित्व करना है।

झंडा तिरंगा है जिसमें सोने, चांदी और कांस्य की तीन समान आकार की क्षैतिज पट्टियाँ हैं । ये रंग पैरालंपिक खेलों में तीन पदकों को जगाने के लिए हैं, और इसका उद्देश्य इस आयोजन से संबंधित प्रतिस्पर्धी और योग्यता संबंधी भावनाओं के बजाय बाधाओं पर सामूहिक काबू पाने का प्रतिनिधित्व करना है। उदाहरण के लिए, समाज द्वारा लगाए गए भेदभावपूर्ण प्रतिकूलताएं , सामूहिक के लिए प्राप्त नए अधिकारों की जीत और सामाजिक असमानता के बारे में बढ़ती जागरूकता का उत्सव । रेसियो के अनुसार तीन रंग विकलांगता के विभिन्न रूपों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं । हालांकि, इन रंगों के अर्थों का निर्णय उनके द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने वाले सामूहिक समुदाय द्वारा किया जाना है।

विकलांगता गौरव" का प्रभाव

एक चारकोल ग्रे झंडा जो ऊपरी बाएं कोने से निचले दाएं कोने तक लाल, हल्के सुनहरे, हल्के भूरे, हल्के नीले और हरे रंग की पांच समानांतर पट्टियों द्वारा तिरछे विभाजित है।

विकलांगता गौरव ध्वज को २०२१ में दृष्टिगत रूप से सुरक्षित और समावेशी बनाने के लिए अपडेट किया गया।

विकलांगता गौरव ध्वज विकलांगता गौरव आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता है । इसकी उत्पत्ति अंग्रेजी बोलने वाले देशों में हुई है, जहां आंदोलन की उपस्थिति अधिक है। मूल विकलांगता गौरव ध्वज २०१९ में एन मैगिल द्वारा बनाया गया था, एक विकलांग महिला, और इसमें एक ज़िग-ज़ैग या बिजली के बोल्ट का डिज़ाइन था, लेकिन दृष्टिबाधित विकलांग लोगों से इनपुट प्राप्त करने के बाद ध्वज को २०२१ में म्यूट रंगों और सीधी विकर्ण पट्टियों के साथ बदल दिया गया था। कुछ घटनाओं और समारोहों में विकलांगता गौरव माह , विकलांगता गौरव सप्ताह और दोनों घटनाओं के लिए परेड शामिल हैं।

इरोस रेसिओ के साथ संबंध

इरोस रेसियो के अनुसार, ध्वज को तीन धातुओं के रंगों से डिज़ाइन किया गया है: सोना, चांदी और कांस्य । ये तीन मुख्य प्रकार की विकलांगता का प्रतिनिधित्व करने के लिए हैं: शारीरिक , मानसिक (बौद्धिक या मनोसामाजिक), और संवेदी । ध्वज और उसके डिज़ाइन की एक सामान्य प्रकृति है, जिसका अर्थ है कि प्रत्येक रंग विशेष रूप से एक विशिष्ट प्रकार की विकलांगता का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, बल्कि उन सभी को एक पूरे के रूप में दर्शाता है । न ही इसका मतलब यह है कि यह विकलांगता के अन्य रूपों को बाहर करता है, जैसे कि आंत संबंधी विकलांगता , या कई विकलांगताएं। यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि कोई भी रंग दूसरे से अधिक महत्वपूर्ण नहीं माना जाता है।

१२ दिसंबर, २०१९ को, इरोस रेसियो ने वालेंसिया के हाई सिल्क आर्ट कॉलेज के एक आधिकारिक

कार्यक्रम में भाग लिया, जिसमें रेशम से बना एक विकलांगता ध्वज प्रदर्शनी में जोड़ा गया। इस अवसर पर, रेसियो ने एक भाषण में अपने कथन को दोहराया कि यह ध्वज सभी विकलांग लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।

अधिनियम के दौरान, ध्वज के लिए एक नई परिभाषा को शामिल करने का उल्लेख किया गया: "पराजय का ध्वज"। यह "विकलांगता" शब्द के प्रतिशोधी चरित्र को उजागर करने और सक्षमतावाद के विशिष्ट संभावित सामाजिक अलगाव से बचने के लिए था।

इस आंदोलन की जड़ें अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के लिए गर्व जागरूकता कार्यक्रमों में हैं। विकलांगता गौरव ध्वज की अवधारणा और डिजाइन भी LGBT गौरव और ब्लैक प्राइड जैसे सामाजिक आंदोलनों से प्रेरित और प्रभावित थे।

संयुक्त राज्य अमेरिका में पहली विकलांगता गौरव परेड १९९० में बोस्टन, मैसाचुसेट्स में आयोजित की गई थी। तब से, विकलांगता गौरव परेड पूरे देश में फैल गई है। परेड नॉर्वे, यूनाइटेड किंगडम, दक्षिण कोरिया और जर्मनी में भी हुई हैं।

शिकागो विकलांगता गौरव परेड ने अपने वक्तव्य में इन लक्ष्यों को रेखांकित किया है :

लोगों की सोचने और "विकलांगता" को परिभाषित करने के तरीके को बदलें।

विकलांग लोगों में आंतरिक शर्म को खत्म करना।

समाज में इस विचार को बढ़ावा दें कि विकलांगता मानव विविधता का एक स्वाभाविक और मौलिक हिस्सा है जिस पर विकलांग लोग गर्व कर सकते हैं।

इन विचारों से प्रेरित होकर ध्वज का निर्माण किया गया, जिसका उद्देश्य न केवल विकलांगता गौरव कार्यक्रमों में, बल्कि सार्वभौमिक और वैश्विक तरीके से सामूहिकता का प्रतिनिधित्व करना है।

कार्य स्थलों पर अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस कैसे मनायें ?

अंतर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस 3 दिसंबर 2024 को मनाया जाएगा। 1992 में पहली बार शुरू किए गए इस कार्यक्रम ने विकलांग समुदाय के लिए तीन दशकों तक

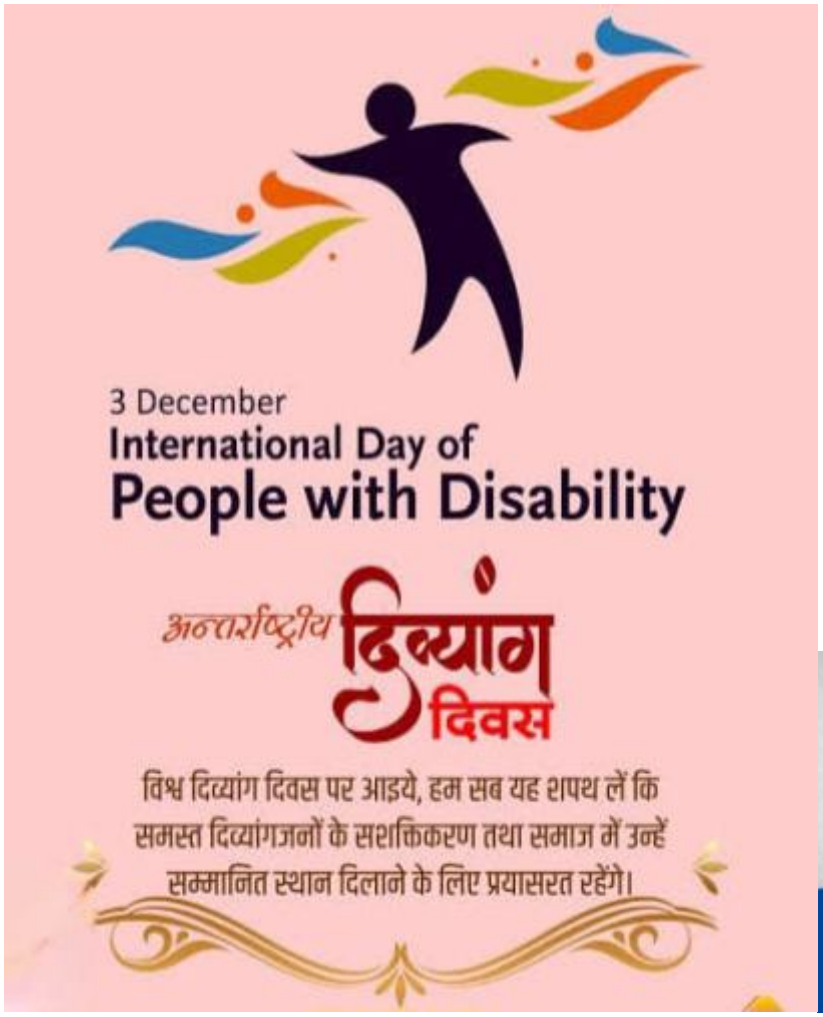

सार्थक बदलाव लाने में अहम भूमिका निभाई है।

पहुँच और समावेशन में सुधार

कार्यस्थल पर, कई सामान्य बाधाएँ विकलांग कर्मचारियों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने से रोक सकती हैं। व्हीलचेयर रैंप से लेकर स्क्रीन रीडर और ब्रेल साइनेज से लेकर सुलभ शौचालय तक, सभी क्षमताओं वाले कर्मचारियों की ज़रूरतों को पूरा करना और यह विचार करना महत्वपूर्ण है कि आपका कार्यस्थल किसी विकलांग व्यक्ति को कैसे प्रभावित कर सकता है। विकलांग व्यक्तियों के इस अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर, अपनी टीम में सभी के लिए एक सुलभ वातावरण बनाएँ।

कार्यस्थल में सुलभता के उदाहरण

- व्हीलचेयर रैम्प/लिफ्ट
- शोर संवेदनशीलता के लिए शांत कमरे
- ब्रेल साइनेज
- अनुकूली डेस्क और कुर्सियाँ
- डिजिटल एक्सेसिबिलिटी टूल्स में निवेश करें

प्रतिज्ञा करें

दुनिया की असमानताओं को एक दिन में हल करना असंभव है, इसलिए इस विश्व विकलांगता दिवस पर विविधता का जश्न मनाने, सुलभता को महत्व देने और अपने विकलांग कर्मचारियों की सेवा करने का सार्थक संकल्प लें। आगे बढ़ते हुए, विशेषज्ञों से सीखें और अपने कार्यस्थल में वास्तविक बदलाव लागू करें जिससे आपके विकलांग कर्मचारियों को लाभ होगा।

5 सार्थक प्रतिज्ञाएँ जो आप कर सकते हैं।

१. विकलांगता चैरिटी को दान करें

२. अपनी भेदभाव नीतियों को मजबूत करें

३. सुगम्यता में सुधार जैसे, व्हीलचेयर रैम्प

४. अपने कर्मचारियों की विविधता का आकलन करें

५. समर्थन का सार्वजनिक बयान दें

★★★

एशिया स्पेसिफिक कंपिटिशन प्रतियोगिता में भारतीय टीम ने 24 पदक प्राप्त किए

S P I d bowling गेम पहली बार एशिया स्पेसिफिक कंपिटिशन का दिल्ली में 19 नवंबर से 22 नवंबर तक आयोजन किया गया था. इस प्रतियोगिता में भारतीय टीम ने 24 पदक प्राप्त किए हैं. इस टीम के कोच के रुप में इलेश रावल, और अक्षत शर्मा पुरुषों की टीम के लिए कोचींग दे रहे थे. भारतीय टीम में गुजरात के प्रकाश वाघेला, छत्तीसगढ़ के इभांशो, दिल्ली से अंकित और आसाम से निरुपम डे एथलिट थे. जब कि महिलाओं की टीम में गुजरात की श्रद्धा पटेल थी साथ ही सीमरन, नेहा और संगीता भी एथलिट के रुप में शामिल थी।

मनोदिव्यांग बच्चों के लिए पवित्रा यात्राधामों का एक दिवसीय सफर

नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल्ड के मनोदिव्यांग छात्रों को गुजरात के डाकोर, गलतेश्वर, मीनावाडा जैसे पवित्र यात्राधामों में दर्शन हेतु ले जाया गया था. इस यात्रा में छात्रों के साथ साथ बच्चों के अभिभावक, शिक्षक ट्रस्टी आदि लोगों ने भी पवित्र यात्राधामों में दर्शन का लाभ उठाया. मनोदिव्यांग बच्चों के लिए यह यात्रा एक यादगार दिन बन गया जिस में उन्होंने बहुत आनंद उठाया था।

मनोदिव्यांग बच्चों को उपहार में मिले प्रोटीन के डिब्बे:

बच्चों के लिए हमेशां कार्यरत स्मित चाइल्ड एज्युकेशन ट्रस्ट अखबारनगर नाव वाडज के मनोदिव्यांग बच्चों को लायन्स क्लब ऑफ फोर्ट के द्वारा उपहार में प्रोटीन पावडर के डिब्बों का वितरण किया गया जिसे पाकर सभी बच्चें बहुत खुश हुए।

मनोदिव्यांग बच्चों द्वारा बनाये गये दीपकों की दिपालली में बिक्री

नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल्ड के मनोदिव्यांग लाभार्थीओं ने दिपावली पर्व में लोगों के घर पर दीप प्रज्वलित करने के लिए ५०००० से अधिक दीपक बनाये थे, फेन्सी दीपक, तुलसी दीपक, हाथी दीपक, वेक्स दीपक, फ्लोटींग दीपक, सिम्पल दीपक जैसे ३० से अधिक विभिन्न डिजाइन और आकारों के आकर्षक दीपक बनाये थे. इन दीपकों को आसपास के स्कूल, सोसायटी, आइ.टी. कंपनी जैसे स्थानों पर ५० से अधिक स्टोल बनाकर बेचा गया था . दीपकों की बिक्री से हुइ आय को २६ मनोदिव्यांग लाभार्थायों में समान रुप से वितरित किया जाता है।

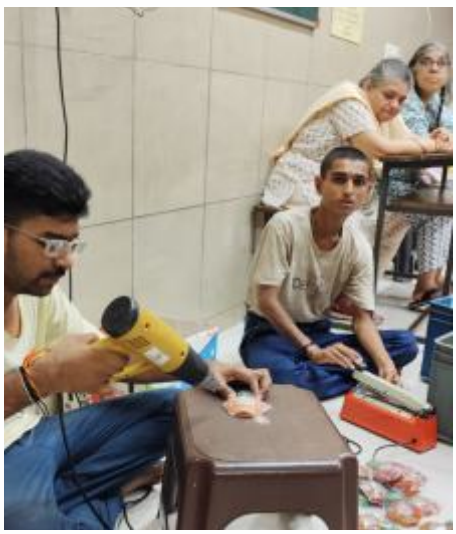

मनोदिव्यांग बच्चों ने हर्षोल्लास के साथ मनाया दीपावली पर्व

नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल्ड के मनोदिव्यांग बच्चों ने सोलारोड स्थित बहुचराजी माता के मंदिर पटांगण में दीपक जलाकर और फटाकों की आतशबाजी कर दीपावली पर्व को हर्षोल्लास के साथ मनाया था. दीपावली के इस उत्सव में लायन्स क्लब ऑफ शाहीबाग, लायन्स क्लब ऑफ संवेदना और लायन्स क्लब ऑफ आशापल्ली के सदस्य भी उत्साह के साथ शामिल हुए थे. वहां उपस्थित सभी बच्चों को मिठाई और उपहार दिए गये थे.

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

संचालित (N.G.O.)

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए नि:शुल्क तालीम संस्था

▲ World Autisum Day ▲Table Tennis Competition ▲ Painting Competition ▲Sports Day Celebration
▲Rakshabandhan Celebration ▲ 15th August Celebration ▲Janmashtami Celebration
▲ Anand Niketan School Visit ▲ Picnic ▲ Traffic Awareness Program Navratri Celebration

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर